अपठित गद्यांश एवं अपठित पद्यांश

अपठित गद्यांश – परिचय

अपठित का अर्थ होता है 'जो पढ़ा नहीं गया हो'। यह किसी पाठ्यक्रम की पुस्तक में से नहीं लिया जाता है। यह कला, विज्ञान, राजनीति, साहित्य या अर्थशास्त्र, किसी भी विषय का हो सकता है। इनसे सम्बन्धित प्रश्न पूछे जाते हैं। इससे छात्रों का मानसिक व्यायाम होता है और उनका सामान्य ज्ञान भी बढ़ता है। इससे छात्रों की व्यक्तिगत योग्यता व अभिव्यक्ति की क्षमता बढ़ती है।

विधि

अपठित गद्यांश पर आधारित प्रश्नों को हल करने के लिए निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना आवश्यक है।

1. दिए गए गद्यांश को ध्यान से पढ़ना चाहिए।

2. गद्यांश पढ़ते समय मुख्य बातों को रेखांकित कर देना चाहिए।

3. गद्यांश के प्रश्नों के उत्तर देते समय भाषा एकदम सरल होनी चाहिए।

4. उत्तर सरल व संक्षिप्त व सहज होने चाहिए। अपनी भाषा में उत्तर देना चाहिए।

5. प्रश्नों के उत्तर कम-से-कम शब्दों में देने चाहिए, साथ हीं गद्यांश में से हीं उत्तर छाँटने चाहिए।

6. उत्तर में जितना पूछा जाए केवल उतना हीं लिखना चाहिए, उससे ज़्यादा या कम तथा अनावश्यक नहीं होना चाहिए। अर्थात, उत्तर प्रसंग के अनुसार होना चाहिए।

7. यदि गद्यांश का शीर्षक पूछा जाए तो शीर्षक गद्यांश के शुरु या अंत में छिपा रहता है।

8. मूलभाव के आधार पर शीर्षक लिखना चाहिए।

अपठित पद्यांश - परिचय

अपठित पद्यांश का अर्थ है 'वह कविता का अंश या कविता जो पहले पढ़ी न गई हो'। अपठित पद्यांश में किसी कविता का एक अंश दिया जाता है तथा उस पर आधारित प्रश्न पूछे जाते हैं। यह कविता किसी (अर्थात उसी कक्षा के) पाठ्यक्रम की पुस्तक में से नहीं दी जाती है। इसे पढ़कर इससे सम्बन्धित पूछे गए प्रश्नों के उत्तर देने होते हैं। इससे छात्रों की कविता पढ़ने और समझने की क्षमता का विकास होता है।

विधि

इनको हल करते समय निम्नलिखित बिंदुओं पर ध्यान देना अनिवार्य है।

1. कविता को दो-तीन बार पढ़ना चाहिए, जिससे उसका भाव और अर्थ अच्छी तरह समझ में आ जाए।

2. कविता को समझकर उत्तर देने चाहिए।

3. प्रश्नों के उत्तर कविता की लाइनों में नहीं देने चाहिए, बल्कि अपने शब्दों में गद्य में देने चाहिए।

4. उत्तर सरल, स्पष्ट और कम शब्दों का प्रयोग करके भावों के साथ व्यक्त करना चाहिए।

अपठित गद्यांश 1

ईश्वरचंद्र विद्यासागर विद्या के ही नहीं दया के भी सागर थे। एक बार एक लड़के ने उनसे एक आना माँगा, तो उन्होंने उससे पूछा "अगर मैं तुझे एक रुपया दे दूँ, तो तू क्या करेगा?" लड़के ने उत्तर दिया - "मैं चार आने के तो बेचने के लिए मुरमुरे (परमल) ले लूँगा और चार आन के चने। शेष आठ आने से हमारे परिवार को दो वक्त रोटी खाने को मिल जाएगी।

" लड़के का ऐसा उत्तर सुनकर विद्यासागर जी बहुत प्रसन्न हुए। उन्होंने तत्काल उसे एक रुपया दे दिया। रुपया पाकर लड़का फूला न समाया और भागता हुआ चला गया। इस घटना को कई वर्ष बीत गए। विद्यासागर जी को लड़के के विषय में कुछ याद नहीं रहा। उनके जीवन में ऐसी घटनाएँ अक्सर घटती रहती थीं। एक दिन विद्यासागर जी एक बाज़ार से गुजर रहे थे। अचानक एक व्यक्ति ने सामने से आकर उनके पैर पकड़ लिए और कहने लगा- "आप मेरे अन्नदाता हैं।

आप मेरे घर चलिए। आपकी कृपा से मैं इतना बड़ा सेठ बना हूँ। मैं आपको अच्छी तरह से पहचानता हूँ। वही छोटा-सा कद, वही पहनावा।" उसके थोड़ा रुकने पर विद्यासागर बोले- "भाई! मैं तुम्हें पहचानता नहीं, तुम बताओ तो सही तुम हो कौन? मैंने तो कभी किसी को कुछ दिया नहीं।" उस व्यक्ति ने विद्यासागर जी को एक रुपए वाली घटना की याद दिलाई।

प्रश्न:1 ईश्वरचन्द्र विद्यासागर ने लड़के को क्या दिया?

(क) आठ आने

(ख) एक रुपया

(ग) दो रुपए

(घ) कुछ भी नहीं

उत्तर: (ख) एक रुपया

प्रश्न:2 रुपए में से चार-चार आने का लड़का क्या करना चाहता था?

(क) मुरमुरे, चने लेना

(ख) चने लेना

(ग) खर्च करना

(घ) मुरमुरे लेना

उत्तर: (क) मुरमुरे, चने लेना

प्रश्न:3 लड़का बाद में क्या बना?

(क) भिखारी

(ख) चने बेचने वाला

(ग) सेठ

(घ) अध्यापक

उत्तर: (ग) सेठ

प्रश्न:4 उपर्युक्त गद्यांश में से कोई दो सर्वनाम छाँटिए।

(क) मैं, उसके

(ख) आप, लड़का

(ग) हमारे, पूरे

(घ) तुम, याद

उत्तर: (क) मैं, उसके (तुम, आप, उसके, कुछ, कई, उन्होंने आदि भी सर्वनाम हैं)

प्रश्न:5 'सेठ' शब्द का पर्यायवाची बताइए।

(क) बड़ा आदमी

(ख) लक्ष्मीपति

(ग) अन्नदाता

(घ) दयावान

उत्तर: (ख) लक्ष्मीपति

अपठित गद्यांश 2

कबीरदास जी ने कहा है⁻"बुरा जो देखन में चला बुरा न मिलिया कोय, जो दिल खोजा आपनो मुझ से बुरा न कोय!" प्रत्येक व्यक्ति अपने दोषों की ओर दृष्टिपात करने के बजाय दूसरों के दोष निकालने तथा छिद्रान्वेषण करने में लगा रहता है। इससे व्यक्ति के अहं की तुष्टि होती है, उसके मन में मिथ्याभिमान जाग उठता है तथा वह दूसरों को नीचा दिखाकर स्वयं को श्रेष्ठ सिद्ध करने का प्रयास करता है।

संसार की यही रीत है⁻व्यक्ति दूसरों को देखकर हँसता है, मगर उसे अपने दोष याद नहीं आते, जिनका न आदि है, न अंत है। मानव गुण-दोष का पुतला है। संभवत: ही ऐसा कोई व्यक्ति मिलेगा, जो यह कह सके कि उसमें कोई दोष नहीं है। फिर भी कैसी विडंबना हे कि हम अपने दोषों की ओर ध्यान न देकर सदैव दूसरों के दोषों को उजागर करने में लगे रहते हैं।

आज जिधर देखिए, निंदकों की भरमार मिलेगी, चुगलखोरों का समूह मिलेगा, दूसरों की पगड़ी उछालने वालों और दूसरों पर कीचड़ उछालने वालों की भारी भीड़ मिलेगी। बस या रेल में सफर करने वालों की बातचीत सुनिए, दफ्तरों में काम करने वालों पर दृष्टिपात कीजिए, सभी दूसरों की निंदा करने में संलग्न मिलेंगे। राजनीति का मैदान तो दूसरों के दोष निकालने के लिए ही माना जाता है।

चाहे बात सच्ची हो या झूठी, बस दूसरे दलों के दोष निकालते रहिए, आपकी कुर्सी सलामत रहेगी। चुनावी सभाओं में जमकर झूठ बोलिए और अपने विरोधी के गुणों को भी दोषों में परिवर्तित करते जाइए, बाजी आपके हाथ ही रहेगी। ज़रा सोचिए, ऐसे कितने लोग हैं, जो अपने दोषों पर ध्यान देकर आत्मवलोकन करते हैं।

प्रश्न:1 व्यक्ति का स्वभाव क्या होता है?

(क) दूसरों में दोष निकालना

(ख) अपने को बड़ा बताना

(ग) दफ्तरों में काम न करना

(घ) फैसला करना

उत्तर: (क) दूसरों में दोष निकालना

प्रश्न:2 व्यक्ति में घमंड होने से क्या होता है?

(क) वह सच बोलता है

(ख) वह चुगलखोरी करता है

(ग) उसमें मिथ्याभिमान जागता है

(घ) उसमें दूसरों को समझने की क्षमता बढ़ती है

उत्तर: (ग) उसमें मिथ्याभिमान जागता है

प्रश्न:3 लोग दूसरों में दोष क्यों निकालते हैं?

(क) झूठ बोलने के लिए

(ख) कुर्सी सलामत रखने के लिए

(ग) अपना काम करवाने के लिए

(घ) खुद को ऊँचा दिखाने के लिए

उत्तर: (ख) कुर्सी सलामत रखने के लिए

प्रश्न:4 'निंदा' शब्द का विलोम शब्द बताइए।

(क) घृणा

(ख) सच्चा

(ग) अच्छाई

(घ) स्तुति

उत्तर: (घ) स्तुति

प्रश्न:5 गद्यांश में से एक युग्म शब्द बताइए।

(क) सच हो या झूठ

(ख) गुण-दोष

(ग) बस या रेल

(घ) राजनीति, मैदान

उत्तर: (ख) गुण-दोष

अपठित गद्यांश 3

पल्लवन—गोस्वामी तुलसीदास ने कहा है कि परोपकार से बड़ा कोई धर्म नहीं और दूसरों को हानि पहुँचाने से बड़ा कोई अधर्म नहीं। अधिकांश व्यक्ति अपने लिए जीते हैं, अपने लिए धन कमाते हैं और केवल अपने स्वार्थ-पूर्ति में लगे रहते हैं, परंतु ऐसे व्यक्तियों को पशु-तुल्य माना जाता है, क्योंकि मनुष्य और पशु में यदि कोई महान अंतर है तो वह है परहित की भावना का।

पशु केवल अपने लिए जीता है, जबकि मनुष्य दूसरों के लिए जीवन जीता है। प्रकृति का कण-कण परोपकार में लीन है अत: मानव का भी कर्तव्य है कि वह 'स्व' की संकुचित परिधि से निकलकर 'पर' के असीम क्षेत्र में प्रवेश करे। संसार के अनेक महापुरुष, जिनके आगे आज भी हम श्रद्धा से शीश झुकाते हैं, परोपकारी थे।

महात्मा गाँधी, सुकरात, ईसामसीह, अब्राहम लिंकन जैसे अनगिनत महापुरुष क्या केवल अपने लिए जिए? उन्होंने अपना संपूर्ण जीवन मानवता की सेवा में लगा दिया और मानवता के लिए ही अपने प्राणों का बलिदान कर दिया। अत: हमारा कर्तव्य है कि हम भी परोपकारी बनें और मानवमात्र के कल्याण के लिए जिएँ।

प्रश्न:1 दूसरों को हानि पहुँचाने से क्या होता है?

(क) अधर्म होता है

(ख) धर्म होता है

(ग) हम धनी बन जाते हैं

(घ) हम स्वार्थी बन जाते हैं

उत्तर: (क) अधर्म होता है

प्रश्न:2 जो स्वार्थपूर्ति में लगे रहते हैं, ऐसे व्यक्ति किस तरह के होते हैं?

(क) परोपकारी

(ख) पशुतुल्य

(ग) महान

(घ) पंडित

उत्तर: (ख) पशुतुल्य

प्रश्न:3 हमारे अंदर कैसी भावना होनी चाहिए?

(क) परहित की भावना

(ख) जानवरों जैसी भावना

(ग) धर्म की भावना

(घ) श्रद्धा की भावना

उत्तर: (क) परहित की भावना

प्रश्न:4 परोपकारी व्यक्ति का क्या कर्त्तव्य है?

(क) धन कमाना

(ख) बुरा-भला देखना

(ग) मानवता की सेवा

(घ) प्राण देना

उत्तर: (ग) मानवता की सेवा

प्रश्न:5 गद्यांश में दिए गए दो परोपकारी व्यक्तियों के नाम लिखो।

(क) महात्मा गाँधी, गोडसे

(ख) ईसामसीह, महात्मा गाँधी

(ग) सुकरात, यवन

(घ) लिंकन, रुस

उत्तर: (ख) ईसामसीह, महात्मा गाँधी

अपठित गद्यांश 4

'पर्यावरण' से तात्पर्य हमारे आस-पास का वायुमंडल, आकाश और परिवेश से है। यदि यह पर्यावरण बिगड़ गया तो हमारे आस-पास दुख, कष्ट और घिर जाएँगे और यदि यह आकाश और परिवेश शुद्ध, पवित्र और निर्दोष है तो हमारा तन-मन स्वस्थ, प्रसन्न और सुखी बन जाएँगे। आज पर्यावरण की सबसे अधिक चर्चा है।

प्रतिदिन बिगड़ते जा रहे पर्यावरण से सभी चिंतित हैं। आखिर कौन बिगाड़ रहा है इस पर्यावरण को? इस पर्यावरण को हम ही बिगाड़ रहे हैं। पर्यावरण की शुद्धता निर्भर है शुद्ध वायु, शुद्ध आकाश, शुद्ध अग्नि, शुद्ध मिट्टी और शुद्ध जल पर।

वायु, आकाश, अग्नि, मिट्टी और जल हमारे जीवन के आधार हैं। इन्हीं से हमारा अस्तित्व है। यदि यही अशुद्ध, मैले और दूषित हो गए तो हमारा तन-मन कैसे स्वस्थ रह सकता है? आज हमारी जनसंख्या तेज़ गति से बढ़ती जा रही है। लोगों को रहने और सिर छिपाने के लिए घर चाहिए।

घर के लिए भूमि चाहिए। इसीलिए जंगल कटते जा रहे हैं। प्राकृतिक जल-स्रोत घटते जा रहे हैं। उद्योग-धंधों के बढ़ने से मिलों और कारखानों का बचा कूड़ा-कचरा जहाँ-तहाँ फेंका जा रहा है। यही कारण है कि पर्यावरण प्रदूषण बढ़ता ही जा रहा है।

प्रश्न:1 वायुमंडल, आकाश और परिवेश मिलकर क्या बनाते हैं?

(क) वातावरण

(ख) पर्यावरण

(ग) धरती

(घ) प्रकृति

उत्तर: (ख) पर्यावरण

प्रश्न:2 पर्यावरण बिगड़ने से क्या होगा?

(क) कष्ट और रोग होंगे

(ख) अंधकार होगा

(ग) पेड़ टूट जाएँगे

(घ) कारखाने बढ़ेंगे

उत्तर: (क) कष्ट और रोग होंगे

प्रश्न:3 पर्यावरण की शुद्धता किस पर निर्भर करती है?

(क) शुद्ध वायु

(ख) शुद्ध आकाश

(ग) शुद्ध जल

(घ) (क), (ख), (ग) सभी

उत्तर: (घ) (क), (ख), (ग) सभी

प्रश्न:4 उद्योग-धंधों के बढ़ने से क्या हो रहा है?

(क) इधर-उधर कूड़ा फैल रहा है

(ख) जनसंख्या बढ़ रही है

(ग) प्रदूषण बढ़ रहा है

(घ) अनगिनत मकानें बन रही हैं

उत्तर: (ग) प्रदूषण बढ़ रहा है

प्रश्न:5 'पर्यावरण को शुद्ध बनाए रखना चाहिए' में कौन सा कारक है।

(क) कर्त्ता

(ख) कर्म

(ग) अपादान

(घ) सम्बन्ध

उत्तर: (ख) कर्म

अपठित गद्यांश 5

'रक्षा-बंधन' अर्थात् 'रक्षा का बंधन' - इन दो शब्दों में भाई-बहन के पवित्र स्नेह का बंधन छिपा हुआ है। सदियों से चली आ रही इस प्रथा में दिखावा नहीं है। भाई-बहन के प्यार को मजबूत करने वाला यह धागा इतना सशक्त है कि जिसकी भावना को बनाए रखने के लिए इतिहास गवाह है कि अनेक भाईयों ने बहनों की रक्षा के लिए अपनी जान की बाज़ी लगाने में भी हिचकिचाहट नहीं की।

इतिहास में ऐसे अनेक उदाहरण हैं, जो इस त्यौहार के सम्मान को और भी अधिक बढ़ा देते हैं। अत्याचारी शेरशाह से बचने के लिए मेवाड़ की महारानी कर्मवती ने मुगल सम्राट हुमायूँ को राखी भेजी थी। इन कच्चे धागों की तारों में बसे सच्चे स्नेह की आभा से हुमायूँ का हृदय भी चमक उठा। एक मुसलमान होते हुए भी अपनी हिंदू बहन की रक्षा के लिए प्राणों को हाथ लेकर हुमायूँ मेवाड़ की ओर चल दिया, पर विधाता की

करनी को कौन रोक सकता है? भाई के पहुँचने से पहले बहन 12000 क्षत्राणियों के साथ जौहर की चिता में भस्म हो चुकी थी। फिर भी भाई ने अपना कर्तव्य निभाया और रक्षा-बंधन के त्यौहार के मूल्य को ठीक प्रकार से आँका। 'रक्षा बंधन' देश के कोने-कोने में मनाया जाता है।

सारी बहनें इस त्योहार का वर्षभर प्रतीक्षा करती रहती हैं और मिष्ठान तैयार करती हैं। बहनें अपने हाथ से भाईयों को राखी बाँधकर मिठाई खिलाती हैं। इस प्रकार आनंद और हँसी-खुशी के साथ यह त्यौहार संपन्न होता है।

प्रश्न:1 रक्षाबंधन के त्यौहार में क्या छिपा है?

(क) स्नेह का बंधन

(ख) भाई से उपहार लेने की प्रथा

(ग) दिखावा करना

(घ) भाई-बहिन की रक्षा

उत्तर: (क) स्नेह का बंधन

प्रश्न:2 महारानी कर्मवती ने किसको राखी भेजी?

(क) शेरशाह

(ख) हुमायूँ

(ग) मेवाड़ के राजा

(घ) अकबर

उत्तर: (ख) हुमायूँ

प्रश्न:3 हुमायूँ के पहुँचने से पहले रानी कर्मवती ने क्या किया?

(क) उत्सव मनाया

(ख) लड़ाई लड़ी

(ग) जौहर किया

(घ) मेवाड़ से चली गईं

उत्तर: (ग) जौहर किया

प्रश्न:4 रक्षाबंधन को आम भाषा में क्या कहते हैं?

(क) रक्षा का बंधन

(ख) राखी

(ग) स्नेह बंधन

(घ) कच्चे धागे

उत्तर: (ख) राखी

प्रश्न:5 कितनी क्षत्राणियों ने एक साथ जौहर किया?

(क) 1200

(ख) 120000

(ग) 120

(घ) 12000

उत्तर: (घ) 12000

अपठित गद्यांश 6

जीवन का आनंद वे अनुभव नहीं कर सकते जो सुखों में जीना सीखते हैं। जो मनुष्य संकटों को सहन करना जानते हैं, वे ही सुख का आनंद लूट सकते हैं। कड़ी धूप में काम करने वाला, धूप और प्यास से पीड़ित व्यक्ति ही छाया और पानी का आनंद पा सकता है। जो लोग सुख पाने के लिए मेहनत करते हैं, वे ही सुख के सही आनंद का अनुभव कर पाते हैं।

जिन व्यक्तियों को बिना परिश्रम किए सुख प्राप्त हो जाता है, वे जीवन के महत्व को नहीं समझते। जो लोग पानी से डरते हैं और डर से किनारे पर बैठे रहते हैं, वे कभी तैर नहीं पाते। लहरों से खेलने का अभ्यास करने वालों को खतरा नहीं होता।

धूप में परिश्रम करने वाला मजदूर ही चाँदनी की ठंडक का अनुभव कर सकता है। वही व्यक्ति आराम का अर्थ जान सकता है जिसने परिश्रम किया है। परिश्रम करके ही सुख का अनुभव किया जा सकता है। दिन भर भूखा रहने वाला व्यक्ति ही रोटी के सही स्वाद को जान पाता है। त्यागी व्यक्ति ही समय के साथ जीवन के सही आनंद को प्राप्त करता है।

प्रश्न:1 सुख का आनंद कौन लूट सकता है?

(क) सुखों में जीने वाला

(ख) संकटों को सहने वाला

(ग) कड़ी धूप में काम करने वाला

(घ) परिश्रम से दूर भागने वाला

उत्तर: (ख) संकटों को सहने वाला

प्रश्न:2 बिना परिश्रम सुख भोगने वाले जीवन में क्या नहीं समझते हैं?

(क) जीवन का महत्व

(ख) सुख का आनंद

(ग) चाँदनी की ठंडक

(घ) रोटी का स्वाद

उत्तर: (क) जीवन का महत्व

प्रश्न:3 जो लोग पानी से डर कर किनारे बैठ जाते हैं वे क्या नहीं कर पाते?

(क) वे जीवन का आनंद नहीं ले पाते

(ख) वे धूप में काम नहीं कर पाते

(ग) वे तैरना नहीं सीखते

(घ) वे अपने पैरों पर खड़े नहीं हो पाते

उत्तर: (ग) वे तैरना नहीं सीखते

प्रश्न:4 कौन सा व्यक्ति जीवन के सही आनन्द को प्राप्त करता है?

(क) भूखा रहने वाला

(ख) धूप में काम करने वाला

(ग) त्यागी व्यक्ति

(घ) परिश्रम से भागने वाला व्यक्ति

उत्तर: (ग) त्यागी व्यक्ति

प्रश्न:5 'चाँदनी' शब्द का पर्यायवाची बताइए।

(क) कौमुदी

(ख) चंद्रिका

(ग) ज्योत्सना

(घ) (क), (ख), (ग) सभी

उत्तर: (घ) (क), (ख), (ग) सभी

अपठित गद्यांश 7

भारतवासियों ने जिस महापुरुष के बताए हुए मार्ग पर चलकर स्वतंत्रता हासिल की, वह थे राष्ट्रपिता महात्मा गांधी। महात्मा गांधी एक समाज सुधारक ही नहीं, मानवता के सच्चे पुजारी भी थे। महात्मा गांधी का जन्म 2 अक्तूबर, 1869 ई० को काठियावाड़ की राजकोट रियासत के पोरबंदर में हुआ था।

इनका असली नाम मोहनदास था और इनके पिता का नाम कर्मचंद था। इनके पिता राजकोट रियासत के मंत्री थे। राजकोट में ही रहकर गांधी जी ने हाई स्कूल की परीक्षा पास की। सन 1888 में वे कानून की शिक्षा प्राप्त करने इंग्लैंड गए।

सन 1915 में वे भारत लौटे। भारत में आकर गांधी जी ने अंग्रेज़ों के विरुद्ध आवाज़ उठाई। चंपारण सत्याग्रह व रौलेट एक्ट जैसे महायुद्ध में जूझने के बाद भारतीय जनता ने पुलिस के अत्याचारों का प्रत्युत्तर हिंसा से दिया। अहिंसा के पुजारी गांधी जी को यह सब असह्य था।

उन्होंने सत्याग्रह स्थापित किया और 6 वर्ष के लिए बंदी बना लिए गए। 1924 में सांप्रदायिक दंगे, 1930 में डांडी मार्च और 1942 में अंग्रेज़ों-हिंदुस्तान-छोड़ो जैसे आंदोलनों के बाद 15 अगस्त, 1947 को भारत स्वतंत्र हुआ। जाते हुए अंग्रेज़ अपनी नीति से भारत का विभाजन कर गए।

30 जनवरी, 1948 को नाथूराम गोडसे नामक एक व्यक्ति ने गोली मार कर बापू की हत्या कर दी। गांधी जी का जीवन अछूतोद्धार, ग्राम-सुधार तथा हिंदू-मुस्लिम एकता को स्थापित करने में बीता। अत: उनके आदर्शों को अपनाकर हमें उनके अधूरे कार्यों को पूर्ण करना चाहिए। यही हमारी गांधी जी के प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

प्रश्न:1 राष्ट्रपिता किस महापुरुष को कहा गया है?

(क) जवाहरलाल नेहरु

(ख) सरदार वल्लभभाई पटेल

(ग) महात्मा गांधी

(घ) बाल गंगाधर तिलक

उत्तर: (ग) महात्मा गांधी

प्रश्न:2 महात्मा गांधी का जन्म कब हुआ?

(क) 2 अक्टूबर, 1869

(ख) 14 नवम्बर, 1869

(ग) 2 अक्टूबर, 1924

(घ) 15 अगस्त, 1947

उत्तर: (क) 2 अक्टूबर, 1869

प्रश्न:3 डाँडी मार्च कब हुआ?

(क) सन् 1931 में

(ख) सन् 1924 में

(ग) सन् 1942 में

(घ) सन् 1930 में

उत्तर: (घ) सन् 1930 में

प्रश्न:4 गाँधी जी की हत्या किसने की?

(क) अंग्रेज़ों ने

(ख) एक मुस्लिम नेता ने

(ग) नाथूराम गोडसे ने

(घ) इनमें से कोई नहीं

उत्तर: (ग) नाथूराम गोडसे ने

प्रश्न:5 'अंहिसा' शब्द का विपरीतार्थक शब्द बताइए।

(क) हिंसा

(ख) सत्याग्रह

(ग) सुधार

(घ) सच्चा

उत्तर: (क) हिंसा

अपठित काव्यांश 1

पर्वत के विशाल शिखरों-सा यौवन उसका ही है अक्षय,

जिसके चरणों पर सागर के होते अनगिन ज्वार सदा लय।

अचल खड़े रहते तो ऊँचा, शीश उठाए तुफानों में

सहन शीलता, दृढ़ता हँसती, जिनके यौवन के प्राणों में।

यह पंथ बाधा को तोड़े बहते हैं जैसे हो निर्झर,

प्रगति नाम को सार्थक करता यौवन दुर्गमता पर चलकर।

आज देश की भावी आशा बनी तुम्हारी हो तरूणाई

नए जन्म की खास तुम्हारे अंदर जगकर है लहराई।

आज विगत युग के पतझर पर तुमको नव मधुमास खिलाना,

नवयुग के पृष्ठों पर तुमको, है नूतन इतिहास लिखाना।

उठो राष्ट्र के नव यौवन तुम, दिशा-दिशा का सुन आमंत्रण,

जगो देश के प्राण, जगा दो नए प्रात का नया जागरण।

प्रश्न-1 यौवन को कैसा माना गया है?

(क) दुर्गम रास्ता

(ख) पर्वत जैसा

(ग) सागर जैसा

(घ) मधुमास जैसा

सही उत्तर – (ख) पर्वत जैसा

प्रश्न-2 नवयुग के लिए लेखक युवकों को क्या करने की प्रेरणा दे रहा है?

(क) नूतन इतिहास

(ख) मधुमास खिलाना

(ग) सहनशीलता

(घ) नव उत्साह

सही उत्तर – (क) नूतन इतिहास

प्रश्न-3 युवकों को कैसा होना चाहिए?

(क) तूफानों की तरह

(ख) आशावादी

(ग) चेतन

(घ) निर्झर की तरह

सही उत्तर – (घ) निर्झर की तरह

प्रश्न-4 प्रगति का नाम, यौवन कैसे सार्थक करता है?

(क) दुर्गमता पर चलकर

(ख) दिशाओं को आंमत्रित करके

(ग) चेतना की अंगडाई

(घ) तूफानों को रोककर

सही उत्तर – (क) दुर्गमता पर चलकर

प्रश्न-5 'अ' उपसर्ग से बना शब्द पंद्याश में से छाँटिए।

(क) अक्षय

(ख) आशा

(ग) आमंत्रण

(घ) आज

सही उत्तर – (क) अक्षय

अपठित काव्यांश 2

सभ्यता कहाँ गई, आ गई, कहाँ है खड़ा विश्व

जा रहा है किधर गति रथ विज्ञान कलाओं का

किस दिशि उन्मुक इतिहास? दे रहा क्या विकास?

क्या शोर समय का है? क्या जोर हवाओं का?

क्या यही सभ्यता का वह सुंदर सुखद स्वर्ग?

है पड़ा जहाँ पग-पग पर मुरदों का पड़ाव,

बिक रहा जहाँ नारीत्व रजत के टुकड़ों पर

फूलों के शव पर जहाँ श्रृंगालों का जमाव।

प्रश्न-1 कवि के अनुसार सभ्यता कहाँ खड़ी है?

(क) रथपर

(ख) हवाओं में

(ग) दोराहे पर

(घ) फूलों के शव पर

सही उत्तर – (ग) दोराहे पर

प्रश्न-2 हमारे इतिहास की क्या अवस्था है?

(क) दिशाहीन

(ख) जुड़ा तुड़ा

(ग) विकास की ओर

(घ) सुखद स्वर्ग

सही उत्तर – (क) दिशाहीन

प्रश्न-3 सभ्यता किस ओर जाना चाहती है?

(क) बिकने की ओर

(ख) विकास की ओर

(ग) सुंदर स्वर्ग की ओर

(घ) नवयुग की ओर

सही उत्तर – (घ) नवयुग की ओर

प्रश्न-4 आज नारीत्व की क्या स्थिती हो गई है?

(क) धन के लिए बिकना

(ख) शर्मनाक

(ग) दासी

(घ) विपत्तियों भरा

सही उत्तर – (क) धन के लिए बिकना

प्रश्न-5 'श्रृंगलों' शब्द का क्या अर्थ है?

(क) कुत्ता

(ख) भेडिया

(ग) सियार

(घ) गधे

सही उत्तर – (ग) सियार

अपठित काव्यांश 3

बहुत दिनों बाद मुझे धूप ने बुलाया।

ताते जल नहा पहन श्वेत वसन आई,

खुले लान बैठ गई दमकली लुनाई,

सूरज खरगोश धवल गोद उछल आया

बहुत दिनों बाद मुझे धूप ने बुलाया।

पैरों में मखमल की जूती-सी क्यारी,

मेघ ऊन का गोला बुनती सुकुमारी,

डोलती सलाई हिलता जल लहराया।

बहुत दिनों बाद मुझे धूप ने बुलाया।

बोली कुछ नहीं एक कुर्सी की खाली,

हाथ बढ़ छज्जे की साया सरका ली,

बाँह छुड़ा भागा, गिर बर्फ हुई छाया।

बहुत दिनों बाद मुझे धूप ने बुलाया

प्रश्न-1 बहुत दिनों के बाद लेखिका को क्या अच्छा लगा?

(क) धूप का बुलाना

(ख) धूप का खिलना

(ग) धूप छा जाना

(घ) धूप से गरमी आना

सही उत्तर – (क) धूप का बुलाना

प्रश्न-2 सूरज को किस रूप में बताया गया है?

(क) रूई का फाहा

(ख) खरगोश

(ग) सफेद फूल

(घ) गेंद

सही उत्तर – (ख) खरगोश

प्रश्न-3 'डोलती सलाई से जल का लहराना' से क्या तात्पर्य है?

(क) हवा का चलना

(ख) बादलों का चलना

(ग) सलाई से पानी हिलाना

(घ) पानी मे लहर उठना

सही उत्तर – (ग) सलाई से पानी हिलाना

प्रश्न-4 लेखिका कहाँ बैठी थी?

(क) आँगन में

(ख) मैदान में

(ग) छज्जे के नीचे

(घ) कमरे में

सही उत्तर – (ग) छज्जे के नीचे

प्रश्न-5 इस पद्यांश में भाषा का कौन सा रूप है?

(क) लोकभाषा

(ख) व्याकरणिक हिन्दी

(ग) खड़ी बोली

(घ) मध्यवर्गीय भाषा

सही उत्तर – (ग) खड़ी बोली

अपठित काव्यांश 4

घास-फूस की खड़ी झोंपड़ी लाज सँभाले जीवन भर की।

कुटिया में मिट्टी के दीपक, मंदिर में प्रतिमा पत्थर की।।

जहाँ बास कंकड में हरि का, वहाँ नहीं चाँदी चमकीली।

मेरा देश बड़ा गर्वीला रीति-रसम ऋतु रंग रंगीली।।

बरस-बरस पर आती होली, रंगों का त्योहार अनूठा।

चुनरी इधर, उधर पिचकारी गालभाल पर कुमकुम फूटा।

लाल-लाल बन जाते काले गोरी सूरत पीली नीली।

मेरा देश बड़ा गर्वीला रीति-रसम ऋतु रंग रंगीली।।

दीवाली दीपों का मेला झिलमिल महल कुटी गलियारे।

भारत भर में उतने दीपक जितने जलते नभ में तारे।।

सारी रात पटाखे छोड़े नटखट बालक उमर हठीली।

मेरा देश बड़ा गर्वीला रीति-रसम ऋतु रंग रंगीली।।

प्रश्न-1 एक झोपड़ी घास की बनी होने पर भी क्या सम्भाल कर रखती है?

(क) प्रतिमा

(ख) बांस

(ग) मिट्टी

(घ) लाज

सही उत्तर – (घ) लाज

प्रश्न-2 मुझे अपने देश पर क्यों गर्व है?

(क) गर्वीला है

(ख) रंग रंगीली

(ग) सम्मानित है

(घ) 1,2,3 सभी हैं

सही उत्तर – (घ) 1,2,3 सभी हैं

प्रश्न-3 किस ऋतु में लाल पीले हो जाते हैं?

(क) होली

(ख) दिवाली

(ग) लोहाड़ी

(घ) संक्रात

सही उत्तर – (क) होली

प्रश्न-4 दीपवाली पर किसका मेला लगता है?

(क) खिलोने का

(ख) मिठाई का

(ग) दीपों का

(घ) लोगों का

सही उत्तर – (ग) दीपों का

प्रश्न-5 पद्यांश में से विशेषण का उदाहरण लिखिए।

(क) झिलमिल महल

(ख) कुमकुम फूटा

(ग) रंग रंगीला

(घ) मंदिर में प्रतिमा

सही उत्तर – (क) झिलमिल महल

अपठित काव्यांश 5

जब तक जीवन मनुज पंथ पर चलता रहता,

प्रतिदिन, प्रतिफल नई कहानी कहता रहता।

जीवन जल का वाची जो बहता रहता है,

अनदेखे अवरोधों को सहता रहता है।।

अन्तर में 'उत्साह', लक्ष्य के प्रति दृढ़ निष्ठा,

कर देती मानव समाज में प्राण प्रतिष्ठा।

सत्य? जहाँ टकराकर मिटते स्वयं प्रभंजन

हो जाता तूफानों चट्टानों का मर्दन।।

यह सात्विक उत्साह मनुज को बल देता है,

पथ की बाधाओं को स्वयं मसल देता है।

जन सेवा का मार्ग महा विस्तृत समुद्र है,

वह तर पाता कहाँ मनुज जो स्वयं क्षुद्र है।।

प्रश्न-1 जीवन मनुज पंथ पर चलता क्या सहता रहता है?

(क) नई कहानी

(ख) बहता जीवन

(ग) अनदेखे अवरोध

(घ) शत्रुता

सही उत्तर – (ग) अनदेखे अवरोध

प्रश्न-2 तूफानों, चट्टानों का मर्दन किससे होता है?

(क) सत्य से

(ख) टकराने से

(ग) टूटने से

(घ) तूफान से

सही उत्तर – (क) सत्य से

प्रश्न-3 अन्दर का उत्साह, निष्ठा समाज में क्या करता है?

(क) उत्तेजना

(ख) प्राण प्रतिष्ठा

(ग) लक्ष्य प्राप्त करना

(घ) उत्सव मनाना

सही उत्तर – (ख) प्राण प्रतिष्ठा

प्रश्न-4 'जन सेवा का मार्ग महा विस्तृत समुद्र है' से क्या तात्पर्य है?

(क) कँटीली झांडियों से भरा

(ख) जानवरों से भरा

(ग) कठिनाइयों से भरा

(घ) अंतहीन कठिनाइयों से भरा

सही उत्तर – (घ) अतंहीन कठिनाइयों से भरा

प्रश्न-5 'क्षुद्र' शब्द का अर्थ बताइए (पद्यांश के आधार पर)।

(क) अपवित्र

(ख) सफाई करने वाला

(ग) गलत विचार वाला

(घ) गंदा रहने वाला

सही उत्तर – (ग) गलत विचार वाला